



Ancient Vedic Mantras and Rituals





MAA LAXMI SWAROOP | माँ लक्ष्मी के स्वरूप और उनकी महिमा | PDF

सनातन धर्म में सप्ताह के सातों दिन किसी न किसी देवी-देवता को समर्पित हैं। माता लक्ष्मी (देवी लक्ष्मी) को धन की देवी कहा जाता है। शुक्रवार का दिन देवी लक्ष्मी को समर्पित है। हम आपको बताते हैं कि देवी लक्ष्मी के 8 रूप हैं। प्रत्येक आकृति का अपना अर्थ होता है। पौराणिक कथाओं में प्रत्येक देवी-देवता के अनेक अवतारों और रूपों (Laxmi Swaroop) का उल्लेख मिलता है। उनकी प्रसिद्धि के बारे में आप कई दिलचस्प कहानियां पढ़ और सुन सकते हैं।

1. आदी लक्ष्मी स्वरूप

आदी लक्ष्मी भगवान श्रीहरि विष्णु की पत्नी हैं और इन्हें लक्ष्मी का मूल स्वरूप (Laxmi Swaroop) भी माना जाता है। भागवत पुराण के अनुसार महालक्ष्मी ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवताओं को प्रकट किया। इसमें महाकाली और माता सरस्वती भी शामिल हैं। आदि लक्ष्मी स्वयं प्राणियों को जीवन प्रदान करती हैं और अपने अनुयायियों के लिए मोक्ष का मार्ग खोलती हैं। यह महालक्ष्मी ही थीं जिन्होंने भगवान विष्णु के साथ रहने का फैसला किया।



2. धन लक्ष्मी स्वरूप

देवी लक्ष्मी का दूसरा रूप धन लक्ष्मी है। इन्हें धन की देवी कहा जाता है। धन लक्ष्मी के एक हाथ में कमल का फूल और दूसरे हाथ में पैसों से भरा बर्तन होता है। उनका कहना है कि अगर आप मां लक्ष्मी की पूजा करेंगे तो पैसों को लेकर कोई परेशानी नहीं होगी। ऐसा माना जाता है कि भगवान श्री हरि विष्णु के अवतार वेंकटेश ने देवी पद्मावती से विवाह करने के लिए कुबेर से कर्ज लिया था। जिसे वे चुका नहीं सके, तब देवी लक्ष्मी धन की देवी के रूप में प्रकट हुईं और भगवान वेंकटेश की मदद की और उन्हें उनके कर्ज से मुक्त कराया।

3. धान्य लक्ष्मी स्वरूप

देवी लक्ष्मी का तीसरा रूप धान्य लक्ष्मी को अन्नपूर्णा का अवतार माना जाता है। जिस घर में धान्य लक्ष्मी की पूजा की जाती है वहां अनाज का भंडार रहता है। इनकी पूजा के अनुसार भोजन में कभी भी लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए।

4. गज लक्ष्मी स्वरूप

देवी लक्ष्मी का चौथा रूप गज लक्ष्मी रूप है जब देवी लक्ष्मी कमल के फूल के ऊपर हाथी पर विराजमान होती हैं। दोनों तरफ हाथी अपनी सूंड में जल भरकर देवी गाजी लक्ष्मी का जलाभिषेक करते हैं। गज लक्ष्मी को कृषि की देवी भी माना जाता है। जो लोग खेती-किसानी से जुड़े हैं उन्हें देवी मां के इस स्वरूप (Laxmi Swaroop) की पूजा करनी चाहिए।



5. संतान लक्ष्मी स्वरूप

देवी लक्ष्मी का पांचवां स्वरूप संतान लक्ष्मी का है। यह स्कंदमाता से लिया गया है और इसलिए इसे समकक्ष माना जाता है। संतान लक्ष्मी की चार भुजाएँ हैं, जिनमें से दो में घड़ा है और अन्य दो में तलवार और ढाल है। इनकी गोद में बालक स्कंद बैठा है। ऐसा कहा जाता है कि जिस घर में देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है, वहाँ माँ लोगों की रक्षा ऐसे करती हैं जैसे वह अपनी संतान हों। जो भी व्यक्ति संतान प्राप्ति की इच्छा रखता है उसे यह अनुष्ठान करना चाहिए और देवी लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए।

6. वीरा लक्ष्मी स्वरूप

लक्ष्मी जी का स्वरूप वीरा लक्ष्मी साहस का प्रतीक है। वीरा लक्ष्मी अपने आठ हाथों में विभिन्न प्रकार के हथियार रखती हैं। वीर और साहसी लोग उनकी पूजा करते हैं। इनकी पूजा से भक्तों की अकाल मृत्यु नहीं होती। इन्हें माँ कात्यायनी का अवतार भी माना जाता है।

7. विजया लक्ष्मी स्वरूप

देवी लक्ष्मी का सातवां रूप विजया या जया लक्ष्मी है। विजया लक्ष्मी लाल साड़ी पहनती हैं और कमल के फूल पर बैठती हैं। इनकी आराधना से श्रद्धालु सभी क्षेत्रों में लाभ प्राप्त कर सकते हैं। विजया लक्ष्मी भक्तों को हर संकट से बचाती है, चाहे वह कानूनी विवाद हो या संपत्ति का मुद्दा।



8. विद्या लक्ष्मी स्वरूप

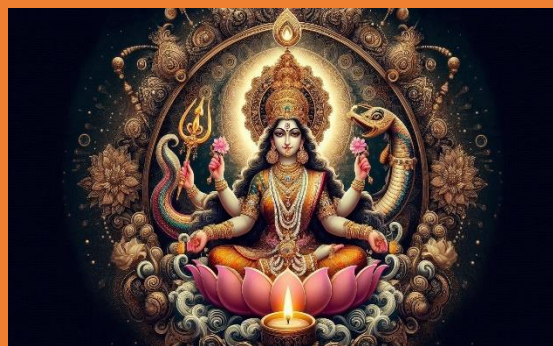
देवी लक्ष्मी का आठवां रूप विद्या लक्ष्मी है। विद्या लक्ष्मी ने सफेद साड़ी पहनी हुई है। इनका स्वरूप (Laxmi Swaroop) देवी ब्रह्मचारिणी के समान है। इनकी पूजा करने से व्यक्ति को ज्ञान की प्राप्ति होती है और शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्मी नमः।

Related Articles



[Maa Laxmi Vrat Katha](#)



[Maa Laxmi Ji Aarti](#)



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com



Follow us on:

